DELHI PUBLIC SCHOOL NEWTOWN
SESSION - 2020-2021
ONLINE ASSESSMENT

CLASS : IX **FULL MARKS : 40**
SUBJECT : HINDI

Question 1

Read the passage given below and answer in Hindi the question that follow, using your own words as far as possible:- **[2x5=10]**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए| उत्तर यथासम्भव अपने शब्दों में हो:-

शंख और लिखित दो भाई अलग-अलग आश्रम बनाकर तपस्वी ऋषि के रूप में रहते थे। एक बार लिखित शंख के आश्रम में आए ।अपने भाई को वहाँ ना देखकर वह आश्रम के बाहर बैठ गए। वे भूखे थे, आश्रम के वृक्षों में लगे सुस्वादु फलों ने उनकी क्षुधा जागृत कर दी। भाई के आने तक वह कुछ फल तोड़कर ले आए और आनंद से खाने लगे।

थोड़ी देर में शंख ने देखा आश्रम में लिखित आराम से बैठे फल खा रहे थे। लिखित के फल खा चुकने के बाद शंख ने पूछा भैया ! यह फल तुम्हें कहाँ से मिले? लिखित ने सहज भाव से बताया-- मैं भूखा था इसलिए मैंने यह फल आपके ही आश्रम के वृक्षों से तोड़े थे।

शंख थोड़ा क्रोधित हुए कि लिखित ने धार्मिक, सामाजिक मर्यादाओं को जानते हुए भी मर्यादा का उल्लंघन किया है।उन्होंने बड़े संकोच से कहा-- भाई तुमने मेरी आज्ञा के बिना फल तोड़कर चोरी की है। किसी दूसरे की वस्तु को उसकी आज्ञा के बिना किसी भी दशा में लेना चोरी के अंतर्गत आता है। अतः तुम अपने इस चोर कर्म के दंड निर्धारण के लिए राजा सुदय के पास जाओ और उन्हें अपना अपराध बताकर दंड स्वीकार करो। लिखित बिना विचलित हुए राजा के पास चले गए।

एक ऋषि को अपने दरबार में आया देखकर महाराज ने आगे बढ़ कर उनका आदर किया।

आसन पर ना बैठते हुए खड़े-खड़े ही लिखित ने कहा, महाराज मैं एक अपराधी की हैसियत से आप के दरबार में अपराध का दंड मांगने आया हूँ। अतः मैं ऋषि के नाते आपका कोई सत्कार स्वीकार करने का पात्र नहीं हूँ। मेरे साथ एक अपराधी जैसा व्यवहार कर मुझे मेरे अपराध का दंड दे। यह कहकर लिखित ने स्वामी की अनुमति के बिना चोरी से फल तोड़कर खाने की बात कही।

महाराज ने कहा-- ऋषि लिखित! यद्यपि धर्म की मर्यादा से यह चोरी का अपराध है पर आपके इस अपराध के पीछे कोई दुर्भावना नहीं थी और ना ही इसके कारण किसी की हानि या अहित हुआ है। पके फल एक दिन स्वयं ही गिर पड़ते और कोई ना कोई उसे खाता ही इसलिए राजा के नाते जहाँ मैं दंड देने का अधिकारी हूँ, वहीं क्षमा करने का भी अधिकारी हूँ। मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ।

लिखित ने कहा महाराज मुझे क्षमा नहीं दंड चाहिए। अतः आप किसी प्रकार का संकोच ना कर विधान के अनुसार मुझे दंड दीजिए।

लिखित का दंड के लिए इतना आग्रह देख राजा ने चोरी के अपराध के लिए लिखित के दोनों हाथ काटने का आदेश दिया। दोनों हाथ कट जाने पर लिखित शंख के पास आए और बड़ी दीनता से कहा कि उन्हें दंड प्राप्त हो चुका है। शंख ने लिखित को गले से लगाते हुए कहा भाई मैंने तुमसे धार्मिक मर्यादा की रक्षा के लिए ऐसा कहा था अब शीघ्र जाकर बाहुदा नदी के तट पर देवों पितरों का तर्पण करो तथा भविष्य में अपने पर इतना संयम रखना कि कभी भी तुमसे मर्यादा का उल्लंघन ना हो।

बाहुदा नदी के तट पर देवो-पितरों की अभ्यर्थना कर जैसे ही लिखित निर्जल में खड़े होकर तर्पण किया उनकी दोनों भुजाओं में दोनों हाथ यथावत प्रकट होकर अंजलि में जल भरकर ऊपर उठने लगा, जैसे उनके पाप का प्रायश्चित पूरा हो गया।

हमारे देश का एक वह युग था, जब अपराध बोध से ग्रस्त होकर अपराधी स्वयं अपराध का दंड मांगने राजा के पास जाते थे। आज अपराधी न्याय दंड से बचना चाहते हैं। समय के साथ जीवन मूल्यों में भले ही आज कमी हो रही है, पर हमारी सांस्कृतिक विरासत हमें यह उद्‌बोधन देती है कि हम अपनी त्रुटियों को स्वीकारें। अपने पाप का प्रायश्चित करें। न्यायपालिका द्‌वारा दिए गए दंड को स्वीकारे। अपराधी को स्वयं दंड देने का निर्णय भूलकर भी ना लें। ऐसा करने से मन निर्मल होगा, प्रवृत्तियाँ सात्विक होगी। सात्विक गुणों का विकास होगा। मानव जीवन श्रेष्ठता की ओर ऊर्ध्वगामी होगा ।

i) लिखित के किस कार्य ने शंख को बेचैन कर दिया था और क्यों?
ii) लिखित महाराज सुदय के दरबार में क्यों गए थे? वहाँ उन्होंने राजकीय सत्कार स्वीकार क्यों न किया?
iii) दंड देने का अधिकारी कौन होता है? लिखित के पाप का प्रायश्चित कब, कैसे पूर्ण हुआ?
iv) हमारी सांस्कृतिक विरासत हमें क्या सीख देती है?
v) आपके विचार में मानव जीवन की श्रेष्ठता किसमें है? आप लिखित के स्थान पर होते तो क्या करते ?

Question 2

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:-
निम्नलिखित गद्‌यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:-

"श्यामू भैया ने रस्सी और पतंग मँगाने के लिए निकला था |"
i) वक्ता और श्रोता का नाम लिखो | दोनों के बारे में एक – एक पंक्तियाँ लिखो । [2]
ii) श्यामू ने रस्सी और पतंग क्यों मंगवाया था ? [2]
iii) श्यामू ने इस कार्य के लिए कहाँ से और कुल कितने पैसे निकले थे ? किससे रस्सी और पतंग मँगवाई गई थी | [3]
iv) अंत में श्यामू के पिता हतबुद्‌धि क्यों हो गए ? वे श्यामू को क्यों नहीं कुछ बोल पाए ? आपके अनुसार क्या श्यामू ने गलती की थी ? [3]

Question 3

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:-

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:-

एक दिन उसने ऊपर आसमान में पतंग उड़ती देखी। न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा। विश्वेश्वर के पास जाकर बोला, " काका मुझे एक पतंग मंगा दो।"

i) 'उसने' से क्या तात्पर्य है ? उसका परिचय दीजिए | [2]

ii) पतंग देख वह क्यों खिल उठा |

[2]

iii) विश्वेश्वर कौन थे और उन्होंने श्यामू के साथ कैसा बर्ताव किया और क्यों ?

[3]

iv) इस कहानी द्वारा लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं? [3]

Question 4

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:-

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:-

"प्रभु के दिए हुए सुख इतने ,
हैं विकीर्ण धरती पर,
भोग सके जो उसे जगत में,
कहाँ अभी इतने नर ?"

i) ईश्वर ने हमारे लिए इस धरती पर किस प्रकार का सुख फैलाया है ? लिखें |

[2]

ii) "कहाँ अभी इतने नर है" – पंक्ति का क्या अर्थ है ? [2]

iii) मानव क्या भूल बैठा है ? वह वास्तव में किस प्रकार जीवन जीना चाहता है ? [3]

iv) कवि के अनुसार इस धरती को स्वर्ग कैसे बनाया जा सकता है ?

[3]